सीसीपी क़ानून- प्रथम सूचना पत्र

परियोजना के बारे में

अंतरराष्ट्रीय समूह जलवायु परिवर्तन की सबसे महत्त्वपूर्ण, जटिल एवं चुनौतीपूर्ण समस्या का सामना कर रहा है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को तत्काल धीमा करने तथा कम करने के लिए नीति और अधिकारिक समाधान की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन से जुड़े हुए अधिकांश राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय क़ानून विगत 30 वर्षों में उभरे हैं। जलवायु क़ानून और नीतियाँ अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा स्थानीय स्तर पर विधिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं से एवं क़ानून के अन्य क्षेत्रों के साथ जटिल संबंधों से बनाई गई हैं। जलवायु परिवर्तन समझौते के प्रभावी कार्यन्वयन को सुनिश्चित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण क़ानून निर्माताओं के बीच सक्रिय संबंधों से प्रभावित है। इस परियोजना का उद्देश्य, शिक्षा के खुले और लचीले साधनों के राजनीतिक उपयोग के साथ सीखने की मिश्रित पद्धति पर आधारित जलवायु परिवर्तन नीति और क़ानून में एक बहु विषयक स्नातकोत्तर कार्यक्रम का विकास,परीक्षण और समतुल्यता है। नए स्नातकोत्तर कार्यक्रम का उद्देश्य मलेशिया, भारत और व्हिएतनाम के हिस्सा लेने वाले भागीदारियों की उच्च शिक्षा के आधुनिकीकरण, सुलभता तथा अंतरराष्ट्रीयकरण की सहायता करना है।

उद्देश्य

कार्य पैकेज 1 का प्रमुख उद्देश्य - ऐसी गतिविधियों के निर्वाहन की तैयारी, जो अन्य परिणाम तथा गतिविधियों में योगदान दे। प्रस्तावित पाठ्यक्रम के भविष्य की सामग्री के रूप में, यूरोप तथा एशिया में समान पाठ्यक्रम के प्रावधान के संबंध में कला की स्थिति में अनुसंधान करना आवश्यक था। प्रस्तावित पाठ्यक्रम में उचित राष्ट्रीय समन्वयन बनाने हेतु प्रत्येक हिस्सा लेने वाले देशों के भागीदारों के लिए पाठ्यक्रम प्रत्यायन ज़रूरतों को संकलित करना आवश्यक था। आगे की सोचे तो, प्रत्येक देश में पाठ्यक्रम प्रदान करनें में सहयोग देने वाले सुविधाओं और प्रावधानों पर विचार किया जाना था और जलवायु परिवर्तन क़ानून केंद्रों के आयोजन हेतु भौतिक स्थान की आवश्यकताओं को निर्दिष्ट किया गया है। साथ ही, मिश्रित सुपुर्दगी के परिप्रक्ष्य में नवीन, आकर्षक और प्रभावशाली शिक्षा पद्धति के सुपुर्दगी में नियोजित सर्वोत्तम कार्यप्रणाली को साँझा करने का सुझाव दिया गया है।

सूचना पत्र प्रमुखताएँ

के बारे में

उद्देश्य

कोविड 19 प्रभाव तथा वर्तमान स्थिति

अपेक्षित परिणाम

Co-funded by the Erasmus+ Programme of the European Union

कोविड -19 प्रभाव और वर्तमान स्थिति

परियोजना का पहला वर्ष भागीदार देशों में कोविड 19 महामारी के लगाए गए अलग बंधनों से अब भी महत्त्वपूर्ण ढंग से प्रभावित रहा, जिसने आमने-सामने की बैठक को असंभव बना दिया। परियोजना की पहली बैठक, जो कि मलेशिया में उतरा विश्वविद्यालय में होनी थी, उसके बदले 23 और 24 मार्च 2021 को ऑनलाईन हुई । कुल मिलाकर, परियोजना के ढाँचे की चर्चा हुई, अपितु ध्यान कार्य पैकेज (डब्लू पी1) की तैयारी पर था।

समस्त डब्लू पी 1 का अग्रणी सिंबायोसिस अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय था। डब्लू पी 1 के अंतर्गत व्यक्तिगत कार्यों का नेतृत्त्व अलग हिस्सा लेने वाले भागीदारों द्वारा किया गया। परियोजना प्रस्तावित पाठ्यक्रम सामग्री पर सूचित चयन करने हेतु, वर्तमान में क्या दिया जा रहा है, यह सुनिश्चत करने के लिए तथा कमियों को पहचानने के लिए इसी तरह के अनुसंधान का यूरोप और एशिया मे प्रबंध करना आवश्यक है। निरंतर डेटा संग्रह के लिए सिंबायोसिस विश्वविद्यालय नेता के रूप में सर्वत्र डेटा संकलन और शिक्षा पदधति के साधनों पर एशिया और कोवंट्री विश्वविद्यालय में एक समान पाठ्यक्रम पर रिपोर्ट संकलित करने तथा यूरोप में एक समान पाठ्यक्रम पर रिपोर्ट संकलित करने पर सहमत हुआ है। हाँलाकि अधिकांश डेटा संग्रह व्यापक डेस्कटॉप अनुसंधान से बना है। प्रारंभिक डेटा भी शैक्षिक क्षेत्र में एवं ऑनलाईन सर्वेक्षण में व्यावसायिओं से साक्षात्कार/ लक्ष्यित समूहों से संकलित किया गया है। समिक्षित पाठ्यक्रम के लिए डेटा संग्रह का मानदंड पाठ्यक्रम के शैक्षिक परिणामों, कौशल एवं प्राप्त क्षमता, पाठ्यक्रम की लंबाई और सामग्री का मापांक(विधि, विज्ञान तथा अन्य प्रकार की मापांकों का अनुपात पहचानना), मूल्यांकन, शिक्षा शास्त्र तथा गुणवत्ता निकषों के साथ न्यायिक संरचना निर्धारण करने पर केंद्रीत है। यह देखा गया है कि यूरोप और एशिया दोनों में शायद ही कोई पाठ्यक्रम है, जो विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन पर काम करता है। यह साधारणतः पाठ्यक्रम के सामान्य पर्यावरण क़ानून भेदों में सम्मिलित है और जलवायु परिवर्तन उसका हिस्सा मात्र है, अतः जलवायु परिवर्तन पर ध्यान देना प्रस्तावित पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। अधिकांश पाठ्यक्रम में क़ानून प्रकारों का प्रभुत्त्व प्रतीत होता है। संग्रहित प्रारंभिक डेटा से ऐसा प्रतीत होता है कि कार्य बाज़ार आवश्यकताओं के साथ श्रेणीबद्ध होने के लिए क़ानून और नीति, पर्यावरण विज्ञान और प्रबंधन के अधिक संतुलित विभाग के बीच लक्ष्य करना चाहिए। परिणामतः, नया पाठ्यक्रम विकसित करते समय बहु-विषयक दृष्टिकोण अत्याधिक अनुशंसित है।यह भी ध्यान देने योग्य है कि विशेषतः एशियाई विश्वविद्यालयों में विशिष्ट कौशल के बदले ज्ञान पर बल दिया जाता है, अतः शिक्षाशास्त्र के नए पाठ्यक्रम को विकासित तथा रूप-रेखांकित करते समय अनुभवजन्य शिक्षा/ व्यावहारिक कार्यप्रणाली ठोस सैद्धांतिक संरचना के साथ कार्यक्रम सुपुर्दगी के केंद्र में होनी चाहिए।

अपेक्षित परिणाम

कार्य पैकेज 1 के अंत में प्रस्तुत परिणाम अपेक्षित हैं-

1) यूरोप में जलवायु परिवर्तन नीति तथा क़ानून पर समान पाठ्यक्रम की रिपोर्ट

2) एशिया में समान पाठ्यक्रम की रिपोर्ट

3) अंतरराष्ट्रीय रिपोर्ट

4) जलवायु परिवर्तन शैक्षिक पद्धति पर सर्वोत्तम कार्यप्रणाली रिपोर्ट

5) प्रत्यायन योजना

6) जलवायु परिवर्तन केंद्र विकास

Co-funded by the
Erasmus+ Programme
of the European Union